**Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,**
*Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com*
*PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JULY-AUGUST, 2021, VOL- 9/66*

# माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना

**रेखा रानी, Ph. D.**

*प्रवक्ता शिक्षक, शिक्षा विभाग, के. आर. महिला महाविद्यालय, (मथुरा), उ0प्र0*

**Abstract**

*शोधकर्त्ता द्वारा चयनित समस्या का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उनके पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना था। जहाँ शोध की प्रमुख परिकल्पना माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर निम्न एवं उच्च पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है। शोध के लिये शोधार्थी द्वारा मथुरा जनपद के माध्यमिक स्तर के पाँच विद्यालयों का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। अध्ययन की प्रकृति को देखते हुये शोधार्थी ने अपने अध्ययन के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। शोधार्थी ने छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण सम्बन्धी आंकड़ों के संग्रहण के लिये डॉ0 तारेश भाटिया एवं डॉ0 (श्रीमती) परमजीत कौर द्वारा निर्मित एवं प्रमाणित पारिवारिक वातावरण मापनी तथा विद्यालयी समायोजन सम्बन्धी आंकड़ों के संग्रहण के लिये प्रो0 के॰पी॰ सिन्हा एवं प्रो0 आर॰पी॰ सिंह (पटना) द्वारा निर्मित एवं प्रमाणित विद्यालयी समायोजन मापनी का प्रयोग करते हुये सह सम्बन्ध गुणांक की गणना की है जिसके आधार पर यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का निम्न ऋणात्मक प्रभाव पाया गया जबकि निम्न पारिवारिक वातावरण का अध्ययन निम्न ऋणात्मक प्रभाव पाया गया।*

*इसी तरह माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का प्रभाव ऋणात्मक प्रभाव पाया गया जबकि निम्न पारिवारिक वातावरण एवं निम्न ऋणात्मक प्रभाव पाया गया।*

***शब्द कुंजी :*** *पारिवारिक वातावरण एवं विद्यालयी समायोजन।*

*Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com*

## प्रस्तावना

शिक्षा आजीवन पढ़ाने वाली प्रक्रिया है। मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जब बालक जन्म लेता है तो वह आंशिक ईश्वरीय शक्ति लेकर पैदा होता है लेकिन इस शक्ति का संवर्धन शिक्षा द्वारा किया जाता है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपनी सभ्यता से अर्जित अपनी संस्कृति की बात करता है और निरन्तर विकास की ओर उन्मुख होता है। व्यक्ति के जीवन में उदारता, उच्चता, सौम्यता, प्रखरता, प्रवीणता, उत्तमता, उत्कृष्टता एवं कौशल्यता के दर्शन शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। बालक की व्यक्तिगत प्रगति, शारीरिक, मानसिक, भावात्मक तथा सामाजिक विकास तब तक भली–भाँति नहीं हो सकता है जब तक कि वह शिक्षा का अर्जन न करे। समाज में सुख–समृद्धि, वैभव, प्रतिष्ठा लोकप्रियता भी शिक्षा के माध्यम से प्राप्त होती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जा सकता है तथा विद्यमान व्यवहार एवं आदतों में परिमार्जन एवं परिष्करण किया जा

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

सकता है। शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा बालक की मूल प्रवृत्तियों का विकास किया जाता है। अतः शिक्षा को मानव का तीसरा नेत्र कहा गया है। शिक्षा के सम्बन्ध में गांधी जी का विचार है कि ''शिक्षा से मेरा आशय व्यक्ति की आत्मा, मन तथा शरीर की उत्कृष्टता से है।''

घर कुटुम्ब अथवा परिवार मानव–समाज की प्राचीनतम आधारभूत इकाई है। इसे व्यक्ति के जीवन की प्रथम पाठशाला भी कहा जाता है। परिवार में ही बालक के व्यक्तित्व का विकास, वंशानुक्रम संस्कारों तथा पर्यावरण से क्रिया–प्रतिक्रिया के फलस्वरूप धीरे–धीरे होता है।

परिवार का व्यक्ति के शैक्षिक, बौद्धिक, व्यावसायिक एवं सामाजिक विकास आदि में महत्वपूर्ण योगदान है। परिवार एक से अधिक दम्पत्तियों एवं बच्चों का वह सामाजिक समूह है जिनके मध्य रक्त सम्बन्ध होता है। पारिवारिक सदस्यों के मध्य परस्पर उत्तरदायित्वों के पूर्ण सम्बन्ध होते है।

क्लेमर के अनुसार– ''परिवार से हम सम्बन्धों की वह व्यवस्था समझते हैं जो माता–पिता तथा सन्तानों के मध्य पायी जाती है।

परिवार ही ऐसा साधन है जहाँ बालक को वास्तविक स्नेह मिलता है जितना स्नेह बालक से माता–पिता या परिवार के अन्य सदस्य कर सकते हैं उतना अन्यत्र दुर्लभ है।

प्रत्येक बालक वातावरण अलग–अलग प्रकार का होता है, प्रायः देखने में आता है कि विभिन्न परिवारों में रूचियों, गतिविधियों तथा बोलचाल के एंग अलग–अलग होते है। इन सब बातों से बालक प्रभावित होता है। चूंकि प्रत्येक परिवार के प्रभाव अलग–अलग होते हैं इसलिये एक बालक दूसरे बालक से पारिवारिक वातावरण की विभिन्नता के कारण विद्यालय में समायोजन भी अलग–अलग तरीके से करता है।

**अध्ययन की आवश्यकता**

बालक का व्यक्तित्व, मनोशारीरिक एवं वातावरण के साथ गतिशील अन्तःक्रिया है। बालक के समायोजन के लिये जैविक कारक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। बालक के समायोजन में समाजीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है तथा यह समाजीकरण की प्रक्रिया बालक के परिवार से प्रारम्भ होती है। सामान्यः माध्यमिक स्तर पर बालक बाल्यावस्था को त्यागकर किशोरावस्था की ओर उन्मुख होता है। ऐसी स्थिति में बालक–बालिका में शारीरिक परिवर्तन होते हैं। बालक के आदर्शों और मूल्यों पर परिवार के क्रिया कलापों तथा संस्कारों का सीधा प्रभाव पड़ता है।

बालक के समायोजन पर समाज का सीधा प्रभाव पड़ता है। बालक विद्यालय से औपचारिक शिक्षा प्राप्त करता है। वहाँ मात्र 6 घण्टे तथा दिन का शेष समय परिवार के साथ ही व्यतीत करता है। अतः परिवार की भूमिका का अध्ययन आवश्यक है।

माध्यमिक विद्यालय में बालक के समायोजन के अनेक समस्यायें आती है। जैसे– अनुशासनहीनता, ड्रॉपआउट तथा अपराध प्रवृत्ति आदि समस्यायें। बालकों की शिक्षा–दीक्षा, देखभाल, तथा ससमायोजन आदि में विद्यालय के परिवार एवं अभिभावकों के साि मिलकर कार्य करने की आवश्यकता प्रतीत होती

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

है। अतः शैक्षिक नीतियों को तय करते समय पारिवारिक वातावरण का ध्यान रखना अति आवश्यक है जिससे कि विद्यार्थियों का माध्यमिक सतर के विद्यालय में समायोजन उचित ढंग से हो सके।

इस प्रकार पारिवारिक वातावरण बालक के विद्यालयी समायोजन को किस सीमा तक प्रभावित करता है आदि तथ्यों से अनुसंधानकर्त्ता को इस बात की प्रेरणा मिली है कि इस समस्या पर वर्तमान में अनुसंधान कार्य करने की आवश्यकता है।

**शोध अध्ययन के उद्देश्य**

शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है–

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनाएँ**

शोध उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए निम्नांकित शोध परिकल्पनाओं का अध्ययन किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
2. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
3. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
4. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

**सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**

**पारिवारिक वातावरण से सम्बन्धित साहित्य**

**भारत में हुये अध्ययन**

**वांरवोरा (2009)** ने ''पिछड़े वर्ग के बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति पर उनके माता–पिता की साक्षरता के प्रभाव का अध्ययन'' किया। निष्कर्ष में पाया गया कि साक्षर माता–पिता के बालकों की शैक्षिक

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

उपलब्धि गैर साक्षर माता–पिता के बालकों से अधिक रहती है। यह तथ्य प्राप्त किया कि निरक्षर माता–पिता अपने व्यस्त कार्यक्रमों के कारण अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरुक नहीं है।

**विदेशों में हुये अध्ययन**

**हारग्रोव, ईमान तथा क्रेन (2005)** ने अपने अध्ययन में पाया कि पारिवारिक सम्बन्ध किशोरों के कैरियर निर्धारण तथा उनकी योजना बनाने में सूक्ष्म किन्तु शक्तिशाली भूमिका अदा करते है।

**अरडम सोलेक एवं स्कोईनफेल्डर (2007)** ने छात्रों की शैक्षिक निष्पत्ति पर परिवार द्वारा पड़ने वाले प्रभाव सम्बन्धी उनकी धारणा का एक गुणात्मक विश्लेषण किया। साक्षात्कार विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थी अपनी अभिप्रेरणा पर परिवार के कई तरीके और विस्तृत सीमा तक प्रभाव की बात स्वीकार करते हैं। अध्ययन में पाया गया कि सांस्कृतिक कारकों का पीढ़ीगत स्तर मूल देश के अनुसार परिवार के प्रभाव का अभिप्रेरणा स्तर तथा उपलब्धि स्तर पर निम्न प्रभाव पड़ता है।

**नोना तारूमी (2009)** ने अध्ययन में यह ज्ञात करने का प्रयास किया कि ''क्या पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विभिन्न मापकों के प्रति संवेदनशील हैं।'' अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक– आर्थिक या पारिवारिक वातावरण शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले दूसरे प्रभावों को कम कर देता है।

**समायोजन से सम्बन्धित साहित्य**

**भारत में हुये अध्ययन**

**मोहन्ती एवं अंजलि शोभीन (2007)** ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोर छात्र–छात्राओं की कार्यशील माताओं एवं अकार्यशील माताओं के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर है।

**रीना (2008)** के अध्ययन का उद्देश्य विद्यालय में शिक्षा और समायोजन में सम्बन्धों का मूल्यांकन करता है। वैयक्तिक प्रेरक शैक्षणिक निष्पत्ति, अभिभावकों की चिंता, पारिवारिक कार्य और शिक्षक से समायोजन आदि तथ्य सम्मिलित है। वे बालक को संज्ञान तथा निष्पत्ति में निम्न स्तर रखते हैं। वे बालक विद्यालय में प्रवेश के प्रथम वर्ष समायोजन में कठिनाई महसूस करते हैं। छात्रों की कठिनाइयों को समझकर उनकी सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाया जा सकता है।

**किशोरी (2009)** के शोधकार्य का उद्देश्य यह था कि बालकों पर अपने मित्रों के साथ बातचीत करने तथा विद्यालयों में उनकी रूचि का समायोजन पर कितना प्रभाव पड़ता है ? शोधकर्त्ता ने आंकड़े एकत्र किये व उनका विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला कि बालकों की विद्यालय में रूचि तथा उनका अपने मित्रों के साथ व्यवहार का विद्यालय के समायोजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। बालक विद्यालय में समायोजित होता है तो उसका समाज में समायोजन आसान हो जाता है।

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**विदेशों में हुये अध्ययन**

**क्लेमण्डम पेगी (2005)** ने सोवियत किशोरियों व इस्रायली किशोरों पर भाषा के माध्यम का उनकी उपलब्धि एवं समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि सोवियत विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा के प्रति उपलब्धि एवं समायोजन स्तर इस्रायली विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न था।

**लौहमैनबोन्ड्रा एवं जे॰ कौराशेल (2008)** ने न्यूयार्क में 693 विद्यार्थियों पर उच्च तथा निम्न स्तर के विद्यार्थियों पर शोध किये गये। यह पाया कि परिवार व विद्यालय दोनों जगह निम्न स्तर के समायोजन वाले विद्यार्थियों में निम्न शैक्षिक उपलब्धि पायी गयी जबकि दोनों जगह उच्च स्तर के समायोजन वाले विद्यार्थियों में उच्च शैक्षिक उपलब्धि पायी गयी।

**विचन बायोलियन (2009)** ने अमेरिका में चीनी प्रवासी परिवारों के किशोरों के दो समूहों के बीच पारिवारिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि के बावजूद भी एशियाई–अमेरिकन छात्र अधिकांश निम्न स्तर मनोवैज्ञानिक समायोजन प्रदर्शित करते हैं जो शैक्षिक समायोजन में विरोधाभास की ओर संकेत करता है।

**अनुसंधान विधि**

प्रस्तुत शोध अध्ययन की विषयवस्तु तथा प्रकृति को देखते हुए शोधकर्त्ता ने **सर्वेक्षण विधि** का चयन किया है।

**न्यादर्श**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुये पांच माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 100 छात्र–छात्राओं का चयन किया है। जिसमें प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राओं को चुना गया है।

**शोध उपकरण**

छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण के लिये डॉ0 तारेश भाटिया एवं डॉ0 (श्रीमती) चरनजीत कौर (ग्वालियर) तथा विद्यालयी समायोजन के लिये प्रो0 के॰पी॰ सिन्हा एवं प्रो0 आर॰पी॰ सिंह (पटना) द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

**सांख्यिकीय विधियाँ**

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का उनके विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिये संग्रहीत आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिये सह–सम्बन्ध गुणांक विधि का प्रयोग किया गया है।

**परिकल्पनाओं का परीक्षण**

**प्रथम परिकल्पना का परीक्षण ($H_1$) माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।**

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

**तालिका सं0 1– उच्च पारिवारिक वातावरण का छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव के सह–सम्बन्ध गुणांक मान की सारणी।**

| क्र.सं. | चर | संख्या N | मध्यमान $\Sigma D^2$ | P (से) | सह सम्बन्ध गुणांक का सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र (उच्च पारिवारिक वातावरण का विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव) | 25 | 3595.34 | –2.2 | निम्न ऋणात्मक सहसम्बन्ध |

उपर्युक्त तालिका सं0 1 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण के सहसम्बन्ध गुणांक का मान –2.2 है जो सह सम्बन्ध गुणांक के सारणीमान –.20 से –.40 के बीच है। अतः निम्न ऋणात्मक सह सम्बन्ध है। अर्थात् हमारी परिकल्पना $H_1$ अस्वीकृत होती है।

**द्वितीय परिकल्पना का परीक्षण ($H_2$) माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।**

**तालिका सं0 2– निम्न पारिवारिक वातावरण का छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव के सह–सम्बन्ध गुणांक मान की सारणी।**

| क्र. सं. | चर | संख्या N | मध्यमान $\Sigma D^2$ | P (से) | सह सम्बन्ध गुणांक का सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्र (निम्न पारिवारिक वातावरण का विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव) | 17 | 678.50 | +.17 | अत्यन्त निम्न धनात्मक सह सम्बन्ध |

उपर्युक्त तालिका सं0 2 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण के सहसम्बन्ध गुणांक का मान +.17 है जो सह सम्बन्ध गुणांक के सारणीमान .00 से +.20 के बीच है। अतः निम्न धनात्मक सह सम्बन्ध है। अर्थात् हमारी परिकल्पना $H_2$ स्वीकृत होती है।

**तृतीय परिकल्पना का परीक्षण ($H_3$) माध्यमिक स्तर के छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।**

**तालिका सं0 3– उच्च पारिवारिक वातावरण का छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव के सह–सम्बन्ध गुणांक मान की सारणी।**

| क्र. सं. | चर | संख्या N | मध्यमान $\Sigma D^2$ | P (से) | सह सम्बन्ध गुणांक का सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्रायें (उच्च पारिवारिक वातावरण का विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव) | 23 | 1377.50 | +.84 | उच्च धनात्मक सह सम्बन्ध |

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

उपर्युक्त तालिका सं0 3 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण के सहसम्बन्ध गुणांक का मान +.84 है जो सह सम्बन्ध गुणांक के सारणीमान +.70 से +.90 के बीच है। अतः उच्च धनात्मक सह सम्बन्ध है। अर्थात् हमारी परिकल्पना $H_3$ स्वीकृत होती है।

**चतुर्थ परिकल्पना का परीक्षण ($H_4$) माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।**

**तालिका सं0 4– निम्न पारिवारिक वातावरण का छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव के सह–सम्बन्ध गुणांक मान की सारणी।**

| क्र.सं. | चर | संख्या N | मध्यमान $\Sigma D^2$ | P (से) | सह सम्बन्ध गुणांक का सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | छात्रायें (निम्न पारिवारिक वातावरण का विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव) | 19 | 1526.50 | –.33 | निम्न ऋणात्मक सह सम्बन्ध |

तालिका सं0 4 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण के सहसम्बन्ध गुणांक का मान –.33 है जो सह सम्बन्ध गुणांक के सारणीमान –.20 से +.40 के बीच है। अतः निम्न ऋणात्मक सह सम्बन्ध है। अर्थात् हमारी परिकल्पना $H_4$ अस्वीकृत होती है।

**अध्ययन के निष्कर्ष**

1. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का निम्न ऋणात्मक प्रभाव पाया गया है।
2. माध्यमिक स्तर के छात्रों के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण का अत्यन्त निम्न धनात्मक प्रभाव पाया गया है।
3. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर उच्च पारिवारिक वातावरण का उच्च धनात्मक प्रभाव पाया गया है।
4. माध्यमिक स्तर की छात्राओं के विद्यालयी समायोजन पर निम्न पारिवारिक वातावरण का निम्न ऋणात्मक प्रभाव पाया गया है।

**शैक्षिक अध्ययन का निहितार्थ**

पारिवारिक वातावरण एक महत्वपूर्ण चर है जो विद्यार्थियों के विद्यालयी समायोजन पर प्रभाव डालता है। अतएव परिवार के वातावरण को संतुलित बनाकर बालकों के विद्यालयी समायोजन को बेहतर बनाया जा सकता है। घर में वातावरण कें प्रति अभिभावकों का सामना न करना पड़े। यदि

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*

परिवार का परिवेश उत्तम होता है तो बालक विद्यालय में नहीं वरन् समाज में कहीं भी अपना समायोजन उचित रूप में स्थापित कर सकता है।

अतः शासन–प्रशासन को ऐसी नीतियां सृजित करनी चाहिये जो समाज के सभी वर्गो के जीवन स्तर में सुधार कर सके जिससे उनका पारिवारिक वातावरण उत्तम बन सके।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

*राय, पारसनाथ (2007), "अनुसंधान परिचय " आगरा, लक्ष्मीनारायण पब्लिकेशसन।*
*श्रीवास्तव डी॰एन॰ एवं श्रीवास्तव बी॰एन॰ (2006), "अनुसंधान विधियां" आगरा, साहित्य प्रकाशन।*
*सिंह, अरूण कुमार (2005), "शिक्षा मनोविज्ञान" पटना, भारती भवन।*
*भटनागर, ओ॰पी॰ (1979), "शिक्षा अनुसंधान विधि का विश्लेषण", मेरठ : ईगल बुक इण्टरनेशनल।*
*माथुर, एस॰एस॰ (2004), "शिक्षा मनोविज्ञान", आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।*
*बेस्ट, ई॰ हेनरी (2005), "रिसर्च इन एजुकेशन" नई दिल्ली, प्रियरर्स प्रिटिंग्स हाल।*
*गैरेट, ई॰ हेनरी (2005), "शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, नई दिल्ली सांख्यिकीय कल्याणी।*
*शर्मा, आर॰ए॰ (2005), "शिक्षा अनुसंधान", मेरठ सूर्या पब्लिकेशन।*
*पाण्डेय, के॰पी॰ (2006), "शैक्षिक अनुसंधान", वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।*
*कौल लोकेश (1993), "शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ", नई दिल्ली, विकास पब्लिसिंग हाऊस।*
*सचदेव, आर॰डी॰ (2003), "समाजशास्त्र के सिद्धान्त" इलाहाबाद, किताब महल।*
*गुप्ता, एस॰पी॰ (2008), "आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन", इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।*
*गुप्ता, एस॰पी॰ अलका (2008), "भारतीय शिक्षा के समसामयिक प्रकरण", इलाहाबाद, : शारदा पुस्तक भवन।*
*लाल एण्ड तोमर (2011), "शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त", मेरठ : आर॰ लाल पब्लिशर्स।*
*सारस्वत, मालती (2007), "शिक्षा मनोविज्ञान की रूप रेखा लखनऊ आलोक प्रकाशन।*
*कोली, लक्ष्मीनारायण (2003), 'रिसर्च मेथोडोलॉजी, आगरा वाई0के0 पब्लिशनर्स*

## जर्नल

*एडसर्च (जनरल ऑफ एजुकेशनल) रिसर्च, आर्गेनाईजेशन Vol. 2, No. 1, April 2011, विलासपुर ( छत्तीसगढ़)।*
*रिसर्च लिक Vol. 10, March 2011, 11 वर्द्धमान अपार्टमेंट, ओल्ड पलासिया, इन्दौर (म॰प्र॰)।*
*भारतीय आधुनिक शिक्षा NCERT कैंपस, नई दिल्ली।*
*यूनिवर्सिटी न्यूज AIU- Delhi, एम0जी0 रोड, गोवा–403001।*
*प्रतियोगिता दर्पण 2/11 ए स्वदेशी बीमा नगर, आगरा*
*इण्टरनेशनल जनरल लक्ष्मीबाई नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन शक्तिनगर, ग्वालियर*

## बेवसाईट

*ugc.nic.in*
*google.com*
*wikepedia.com*
*beiesjeu.com*
*ncert.nic.in*
*yogiana.gov.in*

*Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies*